वन विभाग उत्तर प्रदेश

स्वदेशः स्वराष्ट्रं रक्षेत

चौरी चौरा 100 महोत्सव

गोरखनाथ











गोरक्षनगरी

भारत के उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में गोरखनाथ की पावन तपोभूमि गोरखपुर है जिसे हम गोरक्षनगरी भी कहते है । नेपाल की सीमा के पास होने के कारण और बुद्ध और कबीर की भूमि होने के कारण भी इस शहर का बहुत महत्व है । लाखों की संख्या में सैलानी प्रतिवर्ष इस पूण्य भूमि पर गोरखनाथ, बुद्ध और कबीर को नमन करने आते है । वर्तमान में गोरखपुर को टूरिज्म के दृष्टिगत विश्व मानचित्र में लाने के लिए प्रदेश सरकार ने विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से अभूतपूर्व विकास किया है । तराई का क्षेत्र होने के कारण वैसे भी गोरखपुर नदियों, जंगलो और हरे भरे खेतो का क्षेत्र माना जाता है । इस अथाह प्राकृतिक संपदा और सौदर्य के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य गोरखपुर वन प्रभाग बड़ी कुशलता से कर रहा है । रामगढ़ ताल क्षेत्र विकास के साथ ही शहीद अशफाक उल्लाह खॉ प्राणि उद्यान की स्थापना से हजारों की संख्या में पर्यटक यहाँ प्रतिदिन आने लगे है। रामगढ़ ताल को प्रदेश सरकार ने पहला अधिसूचित वेटलैण्ड का दर्जा दिलाया । 742.245 हेक्टयर में फैली झील को अब रामगढ़ ताल आद्भूमि के नाम से भी जाना जाता है । यहाँ बडी संख्या में प्रवासी पक्षी भी प्रतिवर्ष आते है और पर्यटक यहाँ बर्डवार्च का आनन्द लेते है । पिछले कुछ वर्षो में वन विभाग गोरखपुर ने इस शहर को हरा भरा बनाने के लिए बड़े पैमाने पर वृक्षरोपण किया और लोगो को प्रोत्साहित कर अपने अभियान में सहभागिता सुनिचित की । वन विभाग के प्रयासो से ही गोरखपुर जनपद के वन क्षेत्र में पिछले दो वर्षो में तीन वर्ग किलोमीटर अर्थात 300 हेक्टेयर की वृद्धि हुई । गोरखपुर वन प्रभाग के अन्तर्गत आने वाले जंगल क्षेत्र में प्राचीन मन्दिर, लेहड़ा देवी, तरकुलहा देवी, बुढ़िया माई मन्दिर भी बडी संख्या में पर्यटको को आकर्षित करते है । हजारो की संख्या में माता के भक्त यहाँ आते है और अपनी मनोकामनायें पूर्ण करते है । गोरखपुर को इको टूरिज्म के नक्शे पर सबसे ऊपर ले आने के लिए गोरखपुर वन विभाग कृतसंकल्प है। उम्मीद है कि आने वाले वर्षो में गोरखपुर की नई पहचान रामगढ़ताल आद्रभूमि क्षेत्र, अशफाक खाँ प्राणि उद्यान के साथ ही गोरखपुर के पुराने दर्शनीय स्थल जैसे गोरखनाथ मंदिर, गीता वाटिका, व्ही पार्क आदि भी अपनी चमक को और बढ़ायेगे। काफी टेबुल बुक का भी यही उद्देश्य है कि गोरखपुर आने वाले पर्यटकों को इस शहर के बारे में बताया जाय जिससे उनका प्रवास सुगम हो सकें और वे हमारे शहर को इको टूरिज्म के नक्शें में सबसे ऊपर ले आने में अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकें।





गोरखनाथ मंदिर

गोरखपुर स्थित गोरखनाथ मंदिर नाथ सम्प्रदाय का सबसे बड़ा केन्द्र है। ज्वाला देवी के स्थान से परिभ्रमण करते हुए 'गोरखनाथ जी' ने आकर भगवती राप्ती के तटवर्ती क्षेत्र में तपस्या की थी और उसी स्थान पर अपनी दिव्य समाधि लगाई थी जहाँ वर्तमान में श्री गोरखनाथ मंदिर' है। नाथ सम्प्रदाय के इस महान प्रवर्तक ने अपनी अलौकिक आध्यात्मिक गरिमा से इस स्थान को पवित्र किया था। अतः योगेश्वर गोरखनाथ के पूजा स्थल के कारण इस स्थान का नाम 'गोरखपुर' पड़ा।



अखण्ड धूनी

गुरु गोरखनाथ मंदिर में वर्षों से जल रही धूनी के बारे में कहा जाता है कि गुरु गोरखनाथ हिमालय स्थित कांगड़ा से ज्वाला देवी के दरबार पहुँचे तो देवी ने उन्हें अपने यहाँ भोज के लिये आमंत्रित किया। गुरु गोरखनाथ ने कहा कि वे योगी हैं और भिक्षाटन करके बना कर ही वे खाते हैं। उन्होंने स्वयं खिचड़ी माँग कर आने को कहा और वहाँ से निकल कर वे यहाँ आ गये और अपनी धूनी जमा दी। वही धूनी आज तक अनवरत जल रही है।







भीम सरोवर

गोरखनाथ मंदिर के प्रांगण में स्थित भीम सरोवर द्वापर युग में अस्तित्व में आया था। कहा जाता है कि महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की विजय हुई तो उसके बाद युधिष्ठिर के राज्याभिषेक की तैयारियाँ शुरु हुई। इसी आयोजन के लिये पाण्डु पुत्र महाबली भीम गुरु गोरखनाथ को आमंत्रित करने गोरखनाथ मंदिर पहुँचे थे। बाबा गोरखनाथ उस समय साधना में लीन थे। महाबली भीम उनकी प्रतीक्षा करने लगे और आसपास पानी का कोई स्रोत नहीं दिखा तो उन्होंने अपने पैर के अंगूठे से धरती को दबाया। वहाँ से शुद्ध जल निकल पड़ा और एक कुण्ड बन गया। इसी कुण्ड का बाद में भीम सरोवर के नाम से जाना गया। यहाँ बोटिंग और लाइट एण्ड साउण्ड भी आने वालों के लिये आकर्षण का केन्द्र है।



सबसे लम्बा प्लेट फार्म



गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड के अनुसार गोरखपुर रेलवे स्टेशन के इस प्लेटफार्म को दुनिया का सबसे लम्बा प्लेटफार्म होने का गौरव हासिल है। इस प्लेटफार्म की लम्बाई 4483 फीट यानी 1366.33 मीटर है। इस प्लेटफार्म पर 26 बोगियों वाली दो ट्रेनो को एक साथ खड़ा किया जा सकता है। इस प्लेटफार्म का नाम लिम्का बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड मे भी दर्ज है ।इसके पहले दुनिया का सबसे लम्बा प्लेटफार्म पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में था जिसकी लम्बाई 1072 मीटर है।





रेलवे स्टेशन, गोरखपुर

गोरखपुर जंक्शन पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय होने के साथ ही पूर्वांचल को बिहार, नेपाल और उत्तर भारत को जोड़ने वाला प्रमुख स्टेशन है। यह सन् 1930 अस्तित्व में आया था और पूर्वांचल की जीवन रेखा भी कहते हैं।

रेल मंत्रालय की पहल पर रेल भूमि विकास प्राधिकरण ने गोरखपुर रेलवे स्टेशन को एयरपोर्ट की तर्ज पर विकसित करने की तैयारी शुरू कर दी है। स्टेशन परिसर में ही आधुनिक होटल, शॉपिंग मॉल, रेस्टोरेन्ट और इन्टरटेनमेंट की सुविधाएं उपलब्ध करायी जायेगी।





योगीराज बाबा गम्भीरनाथ प्रेक्षागृह एवं सांस्कृतिक केन्द्र

रामगढ़ ताल के किनारे करीब 52 करोड़ की लागत से बनाया गया भव्य योगीराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह एवं सांस्कृतिक केन्द्र कलाकारों और संस्कृति प्रेमियों के लिए एक बड़ी सौगात है । प्रेक्षागृह के मुख्य सभागार में 1076 लोग बैठ सकते हैं । इसमें एक छोटा प्रेक्षागृह भी बनाया गया है । जिसमें 250 लोग बैठ सकते हैं । पूर्णत : वातानुकूलित यह प्रेक्षागृह आधुनिक गोरखपुर की नई पहचान है ।

महंथ दिग्विजयनाथ पार्क

महंथ दिग्विजयनाथ पार्क रामगढ़ताल क्षेत्र में बनाया गया है । इस पार्क में महंत दिग्जिनाथ जी की 12.5 फीट ऊँची प्रतिमा लगाई गयी है । प्रतिमा के पीछे स्थित दीवार पर म्यूरल आर्ट से ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी के जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत की गई हैं । इस पार्क में एक ओपेन जिम की भी स्थापना की गयी है । इसके चारों ओर रबर का पाथ वे भी बनाया जा रहा है ।









सर्किट हाऊस

रामगढ़ ताल के किनारे बना भव्य सर्किट हाऊस आज शासकीय गतिविधियों, बैठकों और आयोजनों का केन्द्र है। सन् 1997 में उद्घाटन के बाद से उपेक्षित पड़े इस भव्य आधुनिक भवन को योगी आदित्यनाथ की सरकार आने के बाद से सजाया और संवारा गया और इसका विस्तार किया गया इसमें एक मिनी एनेक्सी भवन भी बनाया गया है जो अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त है और इसमें 250 लोगो के बैठने का स्थान है ।









रामगढ़ ताल

गोरखपुर स्थित रामगढ़ ताल 737 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला आद्र भूमि प्रबधन नियमावली 2017 के तहत अधिसूचित होने वाला उत्तर प्रदेश का पहला वेटलैण्ड है । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने दशकों से उपेक्षित रामगढ़ताल को भव्य पर्यटन स्थल के रूप में नई पहचान दे दी है । इसकी तुलना मुम्बई के मरीन ड्राइव से की जाती है। कहा जाता है कि ईसा पूर्व छठी शताब्दी में गोरखपुर का नाम रामग्राम था। यहाँ कोलीय गणराज्य स्थापित था। उन दिनों राप्ती नदी यहीं से होकर बहती थी। बाद में उसकी दिशा बदली तो उसके अवशेष से रामगढ़ ताल अस्तित्व में आया। रामग्राम से ही ताल को रामगढ़ नाम मिला। ताल के बारे में एक और जनश्रुति है कि प्राचीन काल में ताल के स्थान पर एक विशाल नगर था, जो किसी ऋषि के श्राप से ध्वस्त हो गया और वहां ताल बन गया। शुरूआती दौर में यह ताल 18 वर्ग किलामीटर का था जो बाद घटकर 7 वर्ग किलोमीटर में रह गया।

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस ताल को इको टूरिज्म को बढ़ावा देने की दृष्टि से इसे विकसित किया है। पर्यटकों आकर्षित करने के लिए यहां एक वॉटर स्पोर्ट्स काम्पलेक्स का भी निर्माण किया जा रहा है।

रामगढ़ताल के निारे 246 फीट ऊँचा तिरंगा लगाया गया है। यह गोरखपुर को एक अलग पहचान देता है और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।











रामगढ़ ताल के हरियाली से भरे किनारे और खूबसूरत प्लेटफार्म और केनोपी इसे और भी मनमोहक बनाते हैं, यह आधुनिक गोरखपुर की नई पहचान है।



Photo Dhiraj Singh

सेल्फी प्वांइट









रामगढ़ ताल में बोटिंग का आनन्द लेने के लिए एक नौका प्लेटफार्म बनाया है। इस प्लेटफार्म को आकर्षक लाइटिंग से सजाया गया है। यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं और नौकायान के साथ सेल्फी खींचने का भी आनन्द लेते है। शाम को इसकी छटा देखते ही बनती है। इसमें 25 कैसकेट फव्वारे भी लगाए गये है जो शाम के समय अपना रंग बदलते है और इस जगह को आकर्षक बनाते है। यहां लाईट एवं साउण्ड शो का भी आनन्द लिया जा सकता है। रामगढ़ ताल के किनारे बने प्लेटफार्म पर खूबसूरत कनौपी और बैठने के लिए बेंच भी लगाई गयी है। रात को अपनी अनूठी लाइटिंग की वजह से यह बड़ी संख्या पर्यटकों और शहरियों को आकर्षित करता है।

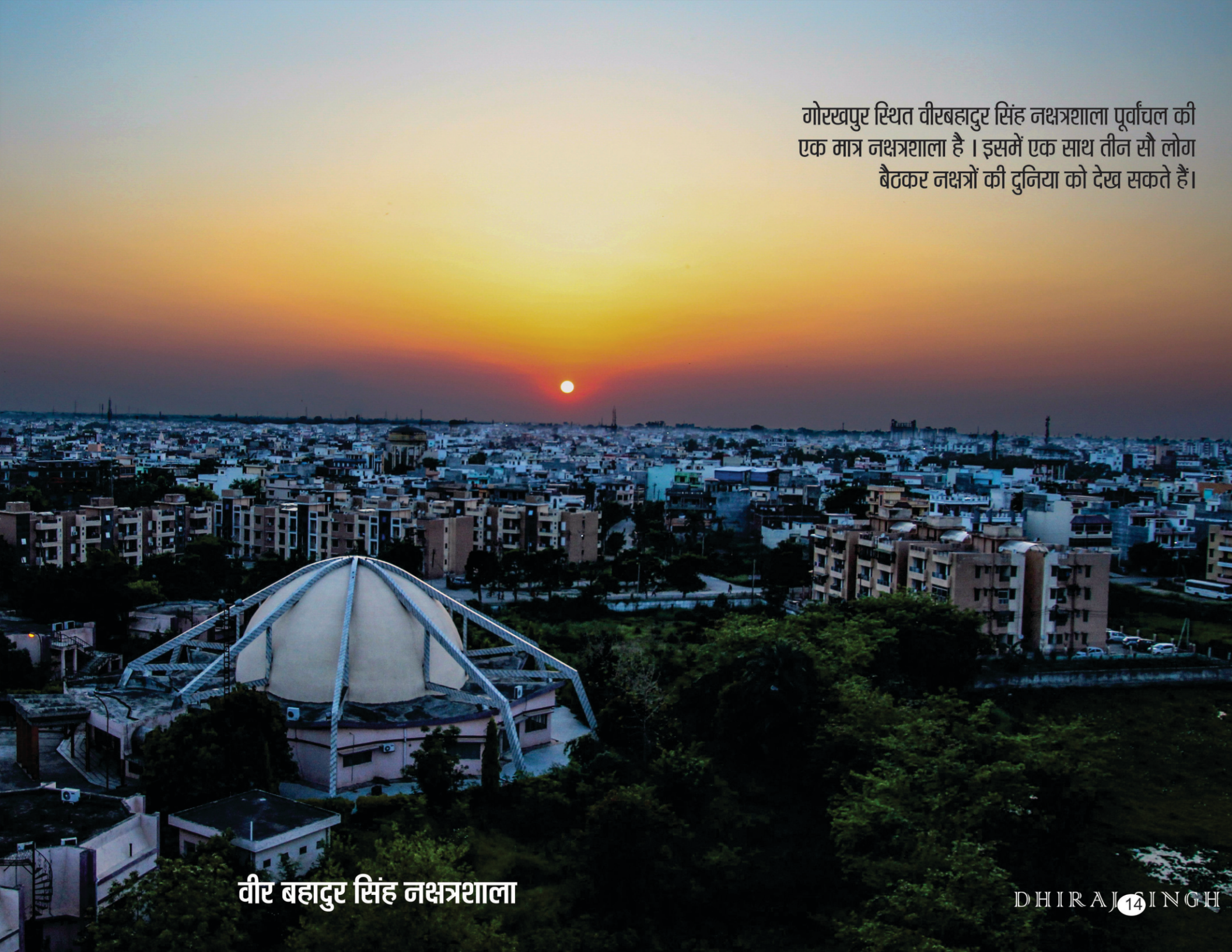

गोरखपुर स्थित वीरबहादुर सिंह नक्षत्रशाला पूर्वांचल की एक मात्र नक्षत्रशाला है । इसमें एक साथ तीन सौ लोग बैठकर नक्षत्रों की दुनिया को देख सकते हैं।

वीर बहादुर सिंह नक्षत्रशाला



राजघाट

शहर के राप्ती नदी के तट पर स्थित राजघाट जीवन की अंतिम यात्रा का अंतिम पड़ाव है । हाल ही में इसका सौंदर्गीकरण कर इसे लाल पत्थरों से राजस्थानी शैली की स्थापत्य कला से सजाया और संवारा गया है। राजघाट के दोनों तटों पर बने महायोगी गुरु गोरक्षनाथ घाट और इसके सामने राजघाट की सुंदरता देखते ही बनती है। सरकार ने राजघाट पर सभी जरूरी सुविधाओं से युक्त अंत्येष्टि स्थल का निर्माण कराया है। इसके साथ ही यहाँ पर्यावरण के अनुकूल प्रदूषण मुक्त लकड़ी और गैस आधारित शवगृह संयत्र की स्थापना की गई है।













बुढ़िया माता मंदिर

गोरखपुर जिला मुख्यालय से 12 की.मी. पूर्व में कुसम्ही जंगल के बीच स्थित है बुढ़िया माता का मंदिर । इस से जुड़ी मान्यता है कि जो भक्त सच्चे हृदय से आकर माता की पूजा करता है वह कभी असमय काल के गाल में नही जाता है । माता अपने भक्तों की हमेशा रक्षा करती है । माता की महिमा दूर-दूर तक फैली है और नवरात्रि में लाखों की संख्या मे भक्त नेपाल, बिहार और झारखण्ड से यहाँ दर्शन करने पहुँचते है । यहाँ माता के दो मंदिर है । दोनो मंदिरो के बीच में एक प्राचीन नाला है । जब इसमे पानी रहता है तो लोग नाव के सहारे इस मंदिर से उस मंदिर के तरफ दर्शन करने जाते है ।





तरकुलहा माता मंदिर

यह ऐतिहासिक मंदिर गोरखपुर शहर से 20 किमी दूर देवरिया मार्ग पर स्थित है। तरकुलहा देवी डुमरी रियासत के बाबू बन्धू सिंह की इष्ट देवी थीं। आजादी की लड़ाई के दौरान बन्धू सिंह इसी मंदिर में अंग्रेजो की बलि दिया करते थे। वे गुरिल्ला लड़ाई में निपुण थे। बन्धू सिंह ने अंग्रेजो कर बलि चढ़ा कार जो परम्परा कायम की थी वो आज भी यहाँ कायम है और यहाँ बकरे की बलि दी जाती है। यह देश का इकलौता मंदिर है जहाँ प्रसाद दे रूप में मटन दिया जाता है। जब देवी भक्त बाबू बन्धू सिंह को अंग्रेजो ने पकड़ कर फाँसी दी तो कहा जाता है कि फाँसी देते समय उनका फाँसी 6 बार टूटा, सातवीं बार जब उन्होने स्वयं माता से जाने की अनुमति मांगी तभी उनको फाँसी हो सकी। इस घटना के बाद माता तरकुलहा का महात्म दूर-दूर तक फैल गया। उनकी फाँसी का गवाह वह पेड़ शहर के अलीनगर बाजार में आज भी मौजूद है।
माता के मंदिर में हर साल लाखों श्रद्धालु आते है और मन्नतें माँगते है। अपनी मन्नत पूरी होने पर यहाँ घण्टी बाँधने परम्परा है।







लेहड़ा देवी मंदिर

यह जनपद का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यह फरेन्दा तहसील में बृजमनगंज मार्ग पर स्थित है। प्राचीन काल में यह स्थल आद्रवन नामक घने जंगल से आच्छादित था इसीलिये इसे अदरौना देवी मंदिर भी कहा जाता है। लोकश्रुति एवं धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस देवी मंदिर की स्थापना महाभारत काल में पाण्डवों ने अज्ञातवास के दौरान की थी। मान्यताओं के अनुसार पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास की अधिकांश अवधि इसी सघन (आद्रवन) में व्यतीत की थी। इस अवधि में अर्जुन ने यहाँ वनदेवी माँ भगवती दुर्गा ने अर्जुन को अनेक अमोघ शक्तियाँ प्रदान की थी। यह मंदिर पवह नदी के तट पर स्थित है।





शहीद स्मारक चौरी चौरा

चौरी चौरा काण्ड 5 फरवरी 1922 को ब्रिटिश भारत में संयुक्त राज्य गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में हुआ था । जब असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाले प्रदर्शकारियों का एक बडा समूह पुलिस के साथ भिड गया था । जवाबी कार्यवाही में प्रदर्शनकारियों ने हमला किया और एक पुलिस स्टेशन में आग लगा दी थी । जिससें उसके सभी कब्जेधारी मारे गये थे । इस घटना में 3 नागरिकों और 22 पुलिसकर्मियों की मृत्यु हुई थी । महात्मा गाँधी जो हिंसा के चोर विरोधी थे, इस घटना के बाद 12 फरवरी 1922 को राष्ट्रीय स्तर पर असहयोग आंदोलन को रोकने की घोषणा की थी।

अंग्रेज सरकार ने मारे गये पुलिसकर्मियों की याद में स्मारक का निम्राण किया था। स्थानीय लोग उन 19 लोगों को नहीं भूले, जिन्हें मुकदमें के बाद फांसी दे दी गई थी। 1971 में उन्होंने शहीद स्मारक समिति का निर्माण किया और झील के पास 12.2 मीटर ऊँची त्रिकोणीय मीनार निर्मित की जिसके तीनों फलको पर गले में फांसी का फन्दा चित्रित किया गया। बाद में सरकार ने उन शहीदों की स्मृति में एक स्मारक बनवाया। इस स्मारक पर उन लोगों के नाम खुदे हुये हैं, जिन्हें फांसी दी गई।













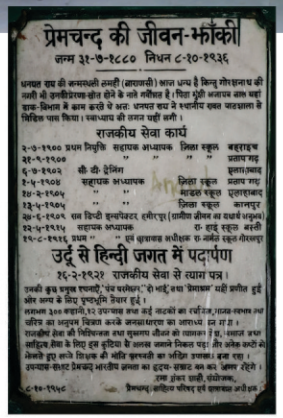

प्रेमचन्द की जीवन-झाँकी

जन्म ३१-७-१८८० निधन ८-१०-१९३६

धनपत राय की जन्मभूमी लमही (वाराणसी) आज अन्य है किन्तु गोरखनाथ की नगरी भी कुलदीपक-शोध होने के नाते गरीमत है। पिता मुंशी अजायब लाल यहां डाक-विभाग में काम करते थे अतः धनपत राय ने स्थानीय सब्जा चाटशाला से शिक्षित पास किया। स्वाध्याय की लगन यहीं लगी।

राजकीय सेवा कार्य

२-७-१९००	प्रथम नियुक्ति	सहायक अध्यापक	जिला स्कूल बहराइच
३१-९-१९००	"	"	" प्रतापगढ़
६-७-१९०२	की वी ट्रेनिंग		इलाहाबाद
१-५-१९०४	सहायक अध्यापक		जिला स्कूल प्रतापगढ़
१४-२-१९०५	"	"	माडल स्कूल इलाहाबाद
१३-५-१९०५	"	"	जिला स्कूल कानपुर
२७-६-१९०९	सब डिप्टी इन्सपेक्टर हमीरपुर (ग्रामीण जीवन का यथार्थ अनुभव)		
१२-५-१९१५	सहायक अध्यापक		रा॰ हाई स्कूल बस्ती
१९-८-१९१६	प्रधान "		" एवं सुपरवाइजर सर्किल रा॰ नार्मल स्कूल गोरखपुर

उर्दू से हिन्दी जगत में पदार्पण

१६-२-१९२१ राजकीय सेवा से त्याग पत्र।

उनकी कुछ अमूल्य रचनाएँ, 'पंच परमेश्वर', 'दो भाई' तथा 'प्रेमाश्रम' यहीं प्रणीत हुई और अन्य के लिए पृष्ठभूमि तैयार हुई।

लगभग ३०० कहानी,१२ उपन्यास तथा कई नाटकों का रचयिता,राजनैतिक तथा पत्रिका का सफल विकास करके अन्धविश्वास का आधार हिल गया।

राजकीय सेवा की निर्धिपत्रता तथा सुलभ जीवन की चाहना में पू॰ ,स्वतंत्र तथा साहित्य सेवा के लिए इस कुटिया से असल जमाने निकल पड़ा और अनेक वर्षों से मेलते हुए लाखे विश्व की मौति कृषकों का अतीत उपासक। अन्त रहा।

उपन्यास-सम्राट प्रेमचन्द भारतीय जनता का हृदय-शताब्दि बन कर अमर रहेंगे।

उन्हें हमारा शतशी श्रद्धांजलि.

C-१०-१९५८

प्रेमचन्द-साहित्य परिषद् द्वारा संस्थान अर्पित

प्रेमचंद पार्क

गोरखपुर के बेतियाहाता स्थित प्रेमचंद पार्क सुबह टहलने और योग करने वाले लोगों का पसंदीदा पार्क है। सुबह लोग यहाँ टहलने आते हैं और स्वच्छ और खुली हवा का आनंद लेते हैं। यह ऐतिहासिक भूमि हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद की कर्मभूमि रही और जिस कुटिया में वे रहते थे वह आज भी वह प्रेमचंद निकेतन के रूप में मौजूद हैं। मुंशी जी ने 5 वर्ष इसी निकेतन में रहकर कफन, बूढ़ी दादी, ईदगाह, नमक का दरोगा जैसी कहानियों की रचना की। इस पार्क के पीछे आज भी वह ईदगाह मौजूद है जिसकी प्रेरणा से मुंशी जी ने अपनी कहानी का नाम ईदगाह रखा। यह पार्क गोरखपुर वासियों के लिये बहुत खास महत्व रखता है।







गोलघर

गोलघर को गोरखपुर का हजरतगंज कहा जाता है। यह यहाँ का मुख्य बाजार है और नेपाल और बिहार तक से लोग यहाँ खरीददारी करने आते है। इंदिरा बाल विहार यहाँ का प्रमुख आकर्षण है जहाँ आपको हर प्रकार के खाने पीने की चीजें मिल जायेंगी। फूड क्रेजी युवाओं की भीड़ आपको हमेशा यहाँ मिलेगी। रात को भी इसकी रौनक देखने लायक होती है। बाल बिहार में लगें आकर्षक झूले और जानवरों की मूर्तियाँ बच्चों के विशेष आकर्षण का केन्द्र रहती है। इंदिरा तिराहे पर लगी पूर्व प्रधान मंत्री स्व० श्रीमती इंदिरा गाँधी की मूर्ति भी गोलघर का प्रमुख आकर्षण है। गोलघर में हर बड़ी कम्पनी के शोरूम आपको मिल जायेगे और गोलघर आधुनिकता से कदम से कदम मिलाकर चलने वाले शापिंग लवर्स का प्रिय डेस्टीनेशन है।











बाबा राघवदास मेडिकल कालेज गोरखपुर

बाबा राघव दास मेडिकल कालेज उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित है। इसकी स्थापना 1969 में हुई थी और यह गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। यह संस्थान गोरखपुर के आस-पास के 300 किलोमीटर के क्षेत्र में एकमात्र तृतीयक रेफरल अस्पताल है जो आस-पास के 15 जिलो के मरीजो की सेवा करता है। यहाँ सीमावर्ती बिहार व नेपाल से भी बड़ी संख्या में लोग इलाज के लिये आते हैं। जापानी इंसेफेलाइटिस से बुरी तरह प्रभावित पूर्व उत्तर प्रदेश और सीमावर्ती इलाकों के मरीजों के लिये यही संस्थान एकमात्र आशा की किरण रहा है। एक अनुमान के मुताबिक बी.आर.डी. मेडिकल कालेज भारत में इंसेफेलाइटिस के 60 प्रतिशत मामलों का इलाज करता है। बीते दिनों कोरोना की महामारी के दौरान गोरखपुर और आस-पास के क्षेत्रो की जनता को इस संस्थान ने अपनी विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान की है।





अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

कूड़ाघाट, गोरखपुर स्थित बहुप्रतीक्षित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना 2019 में हुई। 643 करोड़ की लागत से बना यह उच्च शिक्षा व शोध संस्थान पूर्वी उत्तर प्रदेश व सीमावर्ती विहार व नेपाल के लोगों को अपनी सेवायें देता है। इसकी स्थापना प्रधान मंत्री स्वास्थ, सुरक्षा योजना के तहत केन्द्रीय व्यवस्था एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा की गई है। इसका उद्देश्य मेडिकल साइंस की सभी शाखाओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा के साथ नर्सिंग एवं पैरामेडिकल ट्रेनिंग की उच्च गुणवत्ता वाली सुविधाएं प्रदान करना है।





राजकीय उद्यान (व्ही पार्क)

राजकीय उद्यान शहर के मध्य में गोरखपुर विश्वविद्यालय से मोहद्दीपुर मार्ग पर स्थित है । शहर में सुबह टहलने के लिये यह शहरवासियों की पहली पसंद है । इस पार्क का रख-रखाव उत्तर प्रदेश का उद्यान विभाग करता है। इस पार्क की स्थापना सन् 1952 में हुई थी । लगभग 35 एकड़ में फैले इस पार्क में प्रतिदिन हजारों की संख्या मे लोग सुबह व शाम को टहलते है। इसके अलावा बड़ी संख्या में लोग योग आदि भी करते है । यहाँ पर एक योग प्रशिक्षण केन्द्र भी स्थापित किया गया है । बच्चो के लिए तरह-तरह के झूले और खेलने के लिए हरी घास के मैदान इसे बच्चों में भी बहुत लोकप्रिय बनाते है । यह पार्क "V" आकार में होने के साथ ही शहर में हरियाली का सबसे बड़ा केन्द्र है । इसके आकार के कारण ही इसे व्ही पार्क कहते है ।






बाल क्रीड़ास्थल







सूरजकुण्ड धाम

पौराणिक कथाओं के अनुसार कहा जाता है कि अपने वनवास के काल में प्रभु श्री राम ने ने यहाँ विश्राम किया था । इसी सरोवर में दीपदान और स्नान के उपरान्त उन्होने पिंड बना कर सूर्यदेव का आहवान किया था । कहते हैं कि इस स्थान का उल्लेख वाल्मीकि रामायण में भी है । यहाँ पर भगवान श्री राम ने सूर्यदेव के दर्शन और दीपदान किया था इसीलिए इसका नाम सुर्यकुण्ड पड़ा । यह शहर के बीच मोहनलालपुर मोहल्ले मे स्थित है । यहाँ दीपावली के दिन दीपदान की परम्परा आज भी बड़े धूमधाम से निभाई जाती है । ऐसी मान्यता है कि यहाँ दीपदान करने से भगवान सूर्य अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी करते है । कहा जाता है कि सूरजकुण्ड में 7 कुण्ड है जिनका पानी कभी भी नहीं सूखता है । इस कुण्ड के बीचो बीच में सूर्यदेव का मंदिर स्थित है ।











(क्राईस्ट चर्च) गोरखपुर

गोरखपुर शहर के शास्त्री चौक पर स्थित क्राईस्ट चर्च शहर का सबसे पुराना चर्च है। यह चर्च खुद में दो सौ वर्षो का इतिहास समेटे हुए है। इसकी स्थापना सन् 1820 में हुई थी। इस चर्च को आज भी इसकी प्राचीन भव्यता के साथ संरक्षित किया गया है। चर्च की बनावट व इसकी खूबसूरती आज भी लोगों को आकर्षित करती है। पहले इस चर्च में केवल अंग्रेज अधिकारी ही प्रार्थना करते थे। आजादी के बाद इसे आमजन के लिये खोल दिया गया। (चर्च) में आर्गन पुल पिक (पुरोहित जिस पर खड़े होकर बाइबिल पढ़ कर सुनाते हैं) कुर्सी, मेज, आलमारी, तिजोरी और हाल में लगे बेंच 195 वर्षो से सुरक्षित है।



गीताप्रेस

गीताप्रेस विश्व की सर्वाधिक हिन्दू धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित करने वाली संस्था है । यह गोरखपुर के शेषपुर इलाके में स्थित है । यह एक विशुद्ध आध्यात्मिक संस्था है । गीताप्रेस की स्थापना सन् 1923 ई0 में हुई थी और इसके संस्थापक महान गीता मर्मज्ञ श्री जयदयाल गोयन्दका जी थे । गीताप्रेस की पहचान देश में ही नहीं विदेशों में भी है और इनकी 50,000 से अधिक किताबें रोजाना बिकती हैं । गीताप्रेस के कुल प्रकाशनों की संख्या 1600 है । इनमे से 780 प्रकाशन हिन्दी और संस्कृत में है । शेष प्रकाशन गुजराती, मराठी, तेलुगु, बांग्ला, उड़िया, तमिल, कन्नड, अंग्रेजी और अन्य भारतीय प्रकाशनों में है । गीताप्रेस में प्रतिदिन 50 हजार से अधिक पुस्तकें छपती हैं और यह लागत से 40 से 90 प्रतिशत कम दाम पर बेची जाती है । गीता प्रेस सरकार या किसी भी अन्य व्यक्ति या संस्था से किसी तरह का कोई अनुदान नहीं लेता है ।







गीता वाटिका

गीता वाटिका गोरखपुर शहर में असुरन-पिपराईच मार्ग पर स्थित है। गीता वाटिका राधा कृष्ण भक्ति का प्रमुख केन्द्र है। देश ही नहीं बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक भी यहाँ आते हैं। यहाँ का विशेष आकर्षण का केन्द्र हरिनाम संकीर्तन है जो 53 वर्षों से अनवरत जारी है। गीता वाटिका की स्थापना संत भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार ने सन् 1934-35 में की। 22 मई 1971 में भाई जी के महाप्रयाण के पश्चात उनकी पत्नी ने 1975 को श्री राधा कृष्ण साधना मंदिर का शिलान्यास किया। सन 1985 में उस मंदिर में देव विग्रहों की स्थापनी की गई। गीता वाटिका में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और राधाष्टमी समेत आधा दर्जन से अधिक उत्सव वर्ष भर मनाये जाते हैं। मंदिर में कुल छोटे-बड़े 16 गर्भ गृह तथा 35 शिखर हैं। प्रधान शिखर की ऊँचाई 85 फीट है। इस मंदिर में एक बार अवश्य जाना चाहिये।







दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय

सन् 1957 में स्थापित यह विश्वविद्यालय आजादी के बाद स्थापित प्रथम विश्वविद्यालयों में से एक है। 191.21 एकड़ में स्थापित यह विश्वविद्यालय पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहा है । 6 फेकेल्टियों एवं 29 विभागों के माध्यम से उच्च गुणवत्ता पूर्वा शिक्षा से इस वि श्वविद्यालय ने देश के अग्रणी शिक्षा संस्थानों में अपना स्थान बनाया है ।

केन्द्रीय ग्रन्थालय (सेंट्रल लाइब्रेरी)

गोरखपुर विश्वविद्यालय की सेंट्रल लाइब्रेरी इसके स्थापना के वर्ष से ही बना दी गई । इस लाइब्रेरी का भवन लगभग 4000 स्क्वायर क्षेत्र में बना हुआ है जिसमें 4 लाख से अधिक पुस्तकें विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध है । अब इस लाइब्रेरी के डिजिटलाईजेशन की प्रक्रिया शुरु की गयी है जिससे विद्यार्थियों को ई लाइब्रेरी की सुविधा मिल सके ।



संवाद भवनऔर दीक्षा भवन

संवाद भवन-विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं अकादमिक गतिविधियों के लिये विश्वविद्यालय कैम्पस में ही 250 लोगों की क्षमता का संवाद भवन व 750 लोगों की क्षमता वाला दीक्षा भवन भी बनाया गया है। दीक्षा भवन विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के लिये भी उपयोग में लाया जाता है ।











शहीद अशफ़ाक उल्लाह खाँ प्राणि उद्यान :

यह प्राणि उद्यान पूर्वांचल ही नहीं बल्कि प्रदेश के विकास की नई पहचान है। यह पूर्वांचल में पहला और राज्य में तीसरा चिड़ियाघर है। 260 करोड़ की लागत से 121.34 एकड़ में फैले हुए 29.75 एकड़ का भूमि और 34.01 एकड़ के वेटलैण्ड वाले इस हरे भरे प्राणि उद्याान में वन्य जीवों की बहुत सी प्रजातियों को संरक्षित किया जा रहा है। उद्यान का एग्जिबिट एरिया 57.58 एकड़ है। इसका प्रवेश द्वार प्रसिद्ध नाथ संप्रदाय की पुण्य भूमि गोरखनाथ मंदिर की प्रतिकृति है। महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण स्थल के करीब होने के कारण प्रवेश द्वार एवं परिसर के भीतर भगवान बुद्ध की प्रतिमायें स्थापित की गई हैं। इसके भीतर का लैण्डस्केप और हरियाली देखते ही बनती है।







तितली घर :

शहीद अशफ़ाक उल्लाह खाँ प्राणि उद्यान के प्रमुख आकर्षणों में उत्तर प्रदेश का एकमात्र ढका हुआ तितली पार्क एवं प्रजनन गृह है जिसमें आपको दुर्लभ प्रजाति की रंग-बिरंगी तितलियाँ देखने को मिलेंगी ।

वेट लैण्ड एवं बर्ड वाच एवियरी

यह इस प्राणि उद्यान का सबसे खास भाग है । इस उद्यान का 34.01 एकड़ का अपना वेटलैण्ड है जो कि हरे-भरे पेड़ो से घिरा हुआ है । यहाँ के शांत वातावरण में बहुत से प्रवासी पक्षी यहाँ आते है और प्रजनन करते है । इन पक्षियों को देखने के लिए एक बर्ड वाच एवियरी का भी निर्माण किया गया है जिससे बड़ी संख्या में पक्षी प्रेमी पक्षियों को देखने का आनन्द लेते है ।











सरीसृप गृह

प्राणि उद्यान का सरीसृप गृह सूबे का सबसे बड़ा सरीसृप गृह है जिसमें विलुप्त होती सर्पो की विभिन्न प्रजातियों को आप देख सकते हैं। सांपो के लिए जरूरी 24-25 डिग्री सेल्सियस से 30-32 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान बनायें रखने के लिए यहाँ जरूरी व्यवस्था की गयी है। यहाँ पर रखे गये सर्पो की प्रजातियो में पायथन, रैट स्नेक , रसेल वाइपर, पिट वाइपर, किंग कोबरा आदि प्रमुख है।



मछली गृह

प्राणि उद्यान के भीतर बने मछली गृह में रंग-बिरंगी मछलियों को देखना अपने आप में एक अद्भुत अनुभव है। इस मछली घर में बड़े-बड़े एक्वेरियम और उनमें खूबसूरत लाइटिंग देखते ही बनती है। यहाँ एशियाई प्रजाति मछलियों के साथ ही अफ्रीका, दक्षिण अमेरीका और ताइवान की मछलीयाँ रखी गई है। रंग-बिरंगी मछलियों के प्रति बच्चों के विशेष आकर्षण को देखते हुए उसी के अनुसार एक्वेरियम को डिजाईन किया गया है।







गोरखपुर प्राणी उद्यान में शेर, बाघ, बारहसिंघा, हिरन, पांडा, विभिन्न प्रकार के सर्पो और पक्षियों की प्रजातियाँ, तेंदुआ, जंगली, बिल्ली जैसी 150 से अधिक प्रजातियाँ कृत्रिम व वैज्ञानिक रूप से तैयार किये गए उनके अनुकुल वातावरण में देखने को मिलेगें । इस प्राणी उद्यान को खूब हरा भरा व सुविधाजनक बनाया गया है । इस परिसर में आप कार्ट से भी घूम कर आनन्द ले सकते है ।

















पक्षी

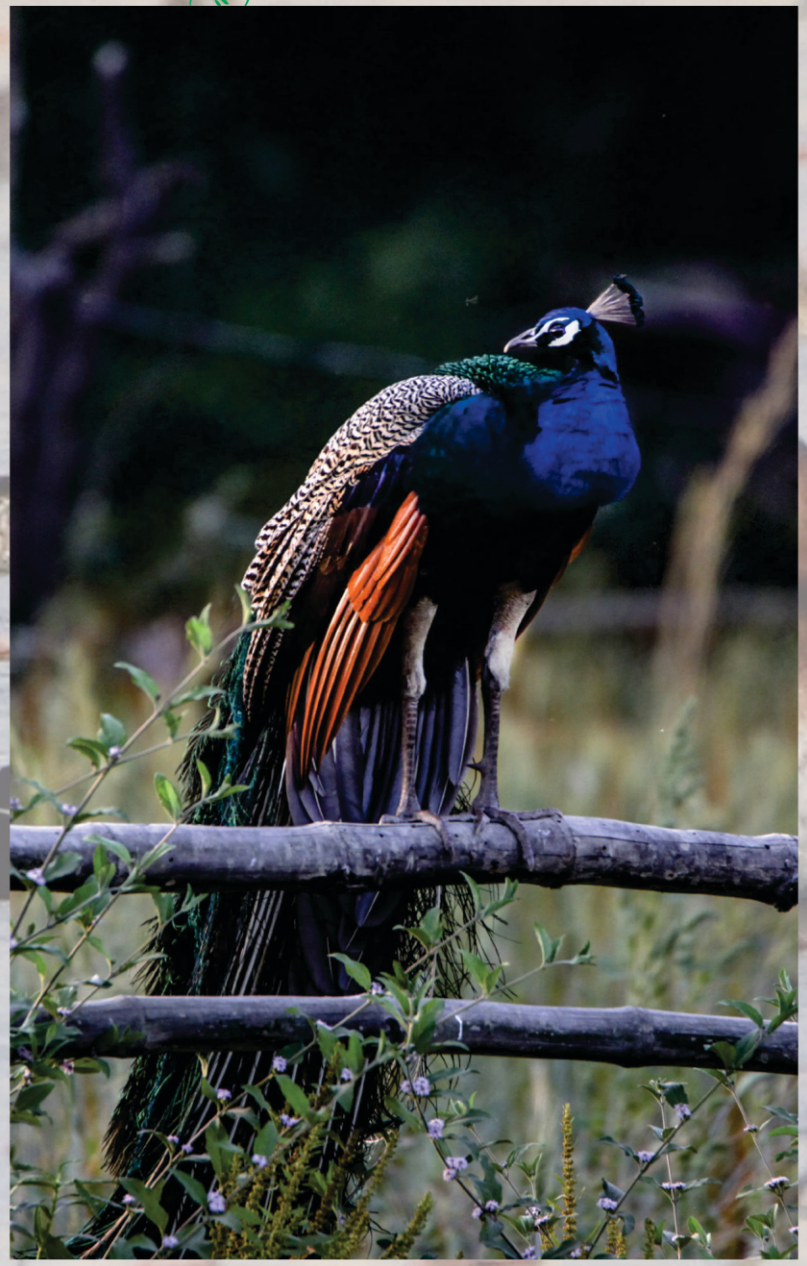

हमारे आस-पास की प्रकृति को पक्षी और उनकी चहचाहट और सुन्दर बनाते हैं। पक्षी कैसे प्रकृति में हजारों रंग भर देते है यह हम सभी ने महसूस किया होगा। पर्यावरण असन्तुलन और शहरीकरण के कारण बढ़ते प्रदूषण और घटते वन्य क्षेत्र और पेड़ पौधों ने पक्षियों के समक्ष भी खुद को बचाये रखने की चुनौती पेश की है। गोरखपुर शहर प्राकृतिक रूप से बेहद समृद्ध है और बड़ी-बड़ी झीले, नदियां, सघन वन क्षेत्र और भरपूर हरियाली शहर की पहचान हैं। पक्षियों के निवास और प्रजजन की दृष्टि से यहां का वातावरण और जल तथा वन संपदा बहुत ही अनुकूल है। इसे पूरे क्षेत्र में विभिन्न प्रजातियों के छोटे-बड़े पक्षी निवास करते है और अपने अनुकूल मौसम में दूर देशों से आकर यहां प्रवास भी करते है। रामगढ़ताल आद्र भूमि क्षेत्र में पक्षियों का पूरा संसार अपने पूरे सौन्दर्य के साथ दृष्टिगत होता है। इस शहर में पक्षी प्रमियों की कमी नहीं है और वे इसके संरक्षण एवं सवर्द्धन अपनी बेहतरीन भूमिका निभा रहे है। इस काफी टेबुल बुक में ऐसे ही पक्षी प्रमियों द्वारा खीचीं गई पक्षियो की तस्वीरें व उनके बारे में एक संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। इससे आपको पक्षियों को समझने और उनकी पहचान करने में आसानी होगी ।



ट्रिट्रिभ - (टिटिहरी)

रेड वाटल्ड लैपविंग (टिटिहरी) - वर्ग का एक प्रसिद्ध पक्षी है जिसे करवानक, पाणविक आदि भी पुकारते है। इसके नर और मादा दोनों एक ही रंग और रूप होते है। यह पक्षी लगभग 16 इंच लम्बा होता है। शरीर का का रंग राखीपन लिये होता है। इस पर गाढ़ी भूरी लकीर और चिन्ह होते है। इसके उपर और नीचे की ओर हल्की भूरी लकीर होती है। आंखे चटक पीली और चोंच तथा टांगे पीली होती है। यह बाग-बगीचों और जंगलों के निकट या सूखे ताल और नरकुल तथा सरपत की झाड़ियां हो, प्रायः रहता है। यह एक दम भूमि पर रहने वाला पक्षी है और अपने खुराक के लिए दिन की अपेक्षा रात में चक्कर लगाता है। खतरे के समय यह पर समेट कर जमीन में दुबक जाता है। सामान्यतः यह अकेले या जोड़े में रहता है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं।

श्वेतकंठ कौडिल्ला (किलकिला)

व्हाइट थ्रोटेड किंगफिशर - यह पक्षी एशिया के विभिन्न भागों में पाया जाता है । यह लगभग 11 इंच का लंबा सुन्दर पक्षी होता है जिसका सिर, गहरा व नीचे का भाग कत्थई होता है । गले एवं वक्ष पर एक बडा सफेद चित्ता होता है । ऊपर का शेष भाग चमकदार नीला होता है । इसकी आँख की पुतली भूरी और पाँव गहरे लाल रंग की लम्बी भारी व नुकीली होती है । यह हिमालय की 6000 फीट की ऊँचाई तक से लेकर सारे देश में पाया जाता है । यह केवल पानी के स्रोतों के निकट ही नही रहता बल्कि खुले स्थानो पर भी रहता है । जो धने जंगलो से ढके न हो । इसे बहुदा खुले स्थानो पर मेंढक, छिपकली, चूहे , कीड़े मकोड़े आदि पकड़ते देखा जा सकता है । इनके प्रजनन का समय मार्च से जूलाई तक होता है तथा मादा एक बार में 4-7 अण्डे देती है ।

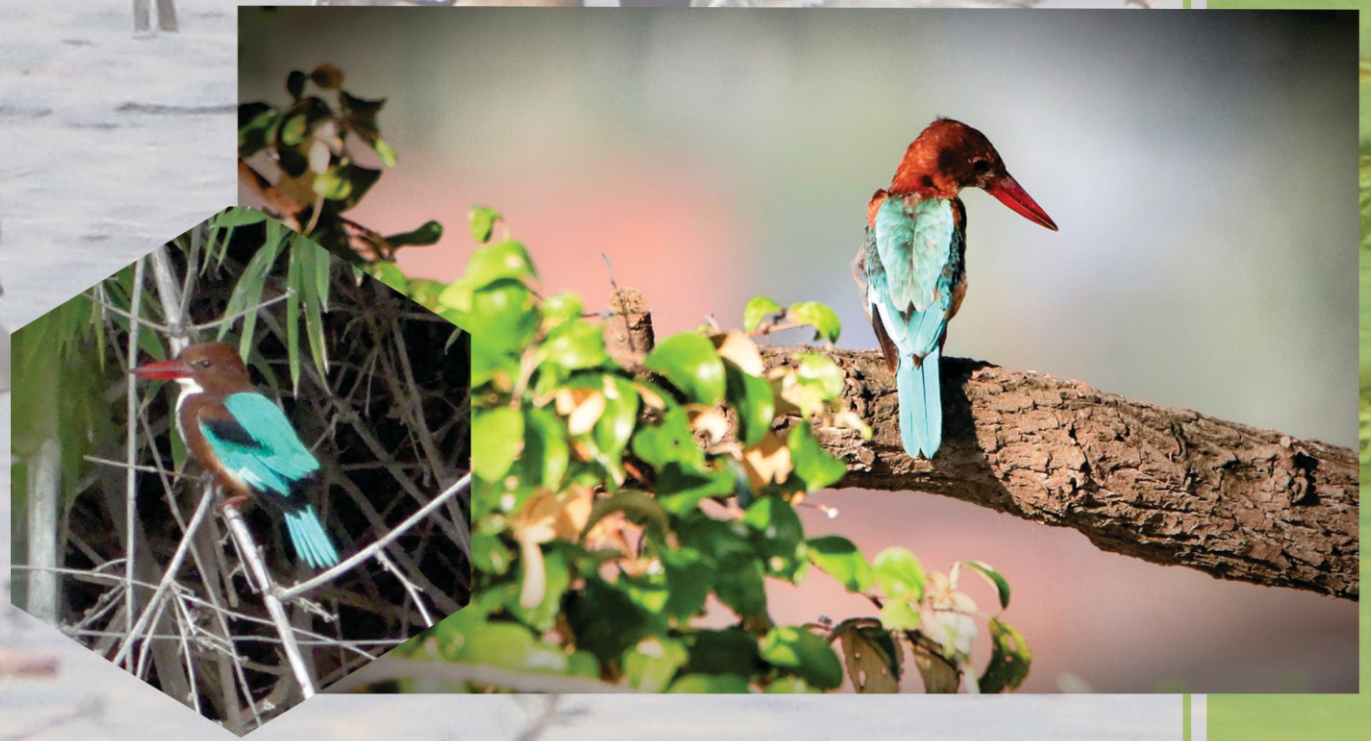



भारतीय सुनहरा ओरियल पंछी

इंण्डियन गोल्डेन ओरियल- यह बहुत ही सुन्दर गहरे पीले रंग का पक्षी होता है। भारतीय सुनहरे ओरियल पक्षी को इसकी आँखों पर बनी पट्टी से आसानी से पहचाना जा सकता है। यह सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है। यह पक्षी लगभग सभी प्रकार के जंगलों में रह सकता है। इस पक्षी का प्रजनन काल अप्रैल से लेकर अगस्त तक होता है। इनका घोसला छोटे आकार का होता है जो पेड़ की टहनी के किनारे बनाया जाता है। मादा ओरियल पक्षी 2-3 अण्डे देती है। इस पक्षी का मुख्य भोजन फल है। यह फूलों का रस व कीट पतंगे भी खाते हैं। यह छोटी छिपकलियों का भी शिकार कर लेते हैं। ये सर्वाहारी वर्ग होते हैं।





टीन्धुर, गजपाँव

ब्लैक विंग स्टिल्ट - यह सबसे पहले आने वाला और सबसे बाद में जाने वाला प्रवासी पक्षी है। पक्षियों में शरीर के अनुपात में इसकी टांगें सबसे लम्बी होती हैं। यह पतला काले और सफेद रंग का पक्षी है जिसकी चोंच सीधी और लम्बी होती है तथा इसकी टांगे चटक गुलाबी रंग की और बहुत लम्बी होती है। यह नर और मादा लगभग एक जैसे होते हैं पर रंग में थोड़ा अन्तर होता है। यह उत्तर भारत का बारहमासी पक्षी है जो जाड़ा आने के साथ-साथ पूरे देश में फैल जाता है इसके जोड़ा बनाने का समय अप्रैल से अगस्त तक का होता है जब बहुत सारे पक्षी किसी स्थान पर नीड निर्माण करते हैं। इनके अंडों का रंग भूरा होता है जिन पर काली चित्तियाँ होती हैं। इनकी मादा 3-4 तक की संख्या से अंडे देती हैं।

छोटी सील्ही

इंडियन विहिसलिंग डक - यह कत्थई रंग की बारहमासी बतख है जो अक्सर कीचड़ से भरे जलाशयों और पेड़ों पर बैठी दिखाई देती है। इसकी पीठ और पंख का रंग हल्का काला, पूँछ भूरी, शरीर का निचला भाग कत्थई होता है। इसकी आँखें भूरी व भीतरी चटक पीला होता है। इसको पेड़ का बत्तख कहना भी अनुचित न होगा क्योंकि वह रात को पेड़ों पर बसेरा लेती है। दिन में भी अपना भोजन लेने के बाद यह पेड़ पर ही रहती है। इसे पेड़ से घिरे ऐसे तालाब पसंद है जिनमें गाद और नरई काफी हो। इसके झुंड नदियों में भी दिखायी पड़ जाते हैं। ये तैरने व डुबकी लगाने में पारंगत होती है।

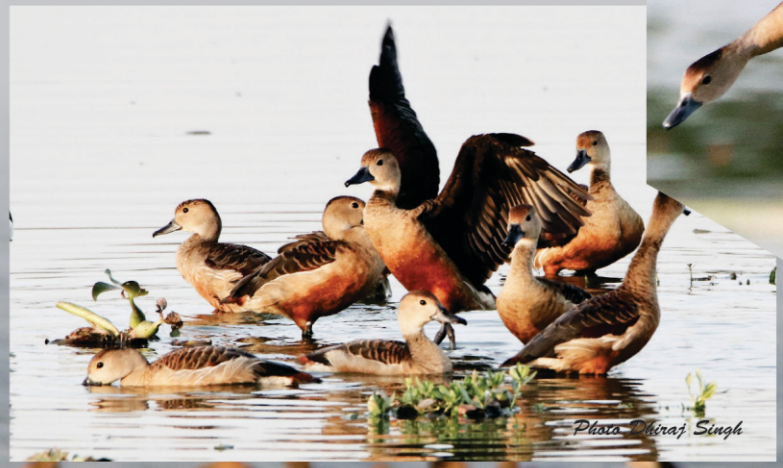



Photo Dhiraj Singh



कलसिरी बुलबुल 'गुल्दुम'

रेड वेन्टेड बुलबुल- कलसिरी बुलबुल हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जिसे प्रायः हम युगल में, मानव बस्ती के निकट से लेकर खेत खलिहानों में देख सकते है। सघन वनों में रहना उसे रूचिवर नहीं है। यह लगभग 8 इंच की सुन्दर सी चिड़िया है। इसके सिर पर कृष्ण शिखा होती है जिसके कारण हिंदी में इसे कलसिरी कहा जाता है। इसकी पूँछ की अंतिम छोर का वर्ण श्वेत व पूँछ के मूल भाग का वर्ण गहन रक्तवर्णी होता है। इसके कारण इसका अंग्रेजी का नाम ''रेड वेन्टेड बुलबुल'' पड़ा है। यह फरवरी से सितम्बर तक वर्ष में एक से अधिक बार प्रजनन करती है। इनके भोजन अन्न के दाने, घास के बीज, कीड़े-मकोड़े, बेर, फूलों के पराग आदि हैं।

सिपाही बुलबुल

रेड विस्कर्ड बुलबुल - एक छोटा पक्षी है जो अपनी मीठी आवाज के लिए जाना जाता है। उसकी मीठी आवाज को दिन और रात दोनों समय सुना जा सकता है। यह पक्षी 200 प्रकार के अलग-अलग धुनों में गा सकता है। इनमें केवल नर पक्षी ही गाते है और इनका रंग भूरा, मटमैला या गंदा पीला और हरा होता है। दुनिया भर में बुलबुल की 1700 से अधिक प्रजातियां पायी जाती है। भारत में पाई जाने वाली प्रजातियों में 'सिपाही बुलबुल' अधिक प्रसिद्ध है। सिपाही बुलबुल के सिर पर काले रंग की कलगी होती है जो सिपाही की टोपी जैसी दिखायी देती है, इसीलिए कलगी वाले बुलबुल को सिपाही बुलबुल कहते है। इसका भोजन मुख्य रूप से फल, सब्जियां , कीड़े-मकोड़े हैं। मादा बुलबुल एक बार 5 से 6 अंडे देती है और 20 दिन बाद बच्चे निकलने शुरू हो जाते है। इनका जीवनकाल 1 से 3 साल तक ही होता है।



ब्राह्मणी बत्तख (चकवा चकवी)

रूडी शेल्डक - ब्राह्मणी बत्तख को चकवा चकवी नाम से भी जाना जाता है। यह एक प्रवासी पक्षी है, जो भारत के अलग-अलग हिस्सों में सर्दियों में प्रवास करने आते है। बुद्ध धर्म इस पक्षी को पवित्र माना जाता है। तिब्बत और मंगोलिया में यह पक्षी संरक्षित पक्षी की श्रेणी में आता है। इसके शरीर का रंग नारंगी भूरा, सिर का रंग हल्का पीला तथा इसकी पूंछ व उड़ने वाले पंख काले रंग के होते है। इसकी पूँछ काले रंग की तथा पांव गहरे स्लेटी रंग के होते है। इसका आकार 23-28 इंच तक होता है और नर और मादा के रंग रूप में अधिक अंतर नहीं होता है। प्रजनन के समय इनके रंग में बदलाव आता है। यह पक्षी मुख्यतः दलदली क्षेत्रों, नदियों के किनारें, झीलों और जमा पानी की जगहों पर दिखाई देते है। यह पक्षी रात के समय भी सक्रिय होते है। इनका मुख्य भोजन घास, पौधों की पत्तियां, जलीय वनस्पति, अनाज व पानी में पाये वाले छोटे जीव हैं। यह मार्च और अप्रैल माह में अपने प्रजनन क्षेत्र में पहुंच जाते है। एक बार जोड़ा बनाने के बाद यह सारी जिन्दगी साथ रहते है।





मुनिया

स्केली ब्रेस्टेट मुनिया एक पक्षी है जो भारत श्रीलंका, इडोनेशिया, किलोपीन्स तथा अफ्रीका का देशज है । इसका आकार गौरेया से कुछ छोटा होता है । यह छोटे-छोटे झुंडों में रहती है और खेतो में भूमि पर गिरे बीजों को खाती है । यह छोटी झाडियों या वृक्षों पर 5-10 फुट की ऊँचाई पर धोसला बनाती है । इस पक्षी के प्रजनन का समय जून से अक्टूबर माह तक होता है । यह भारत के सभी हिस्सों में पाया जाता है । मादा आमतौर पर 4-6 अण्डे देती है और इनकी औसत आयु 6-7 वर्ष होती है ।

शकरखोरा

परपल सन बर्ड - शकरखोरा एक छोटी सी सुन्दर चिड़िया है, जो हमारे खेतों और पुष्प उद्यानों में इधर-उधर फुदरती फूलों का रस चूसते प्रायः दिखाई देती है। इसकी मादा का पृष्ठ भाग भूरा और निचला पीत वर्ण लिए होता है व नर का सिर व पृष्ठ का आंशिक भाग भूरा व शेष चमकीला नील वर्ण का होता है। शकरखोरा पुष्पों में प्राकृतिक परागण करने वाला पक्षी है । यह भारत का बारहमासी पक्षी है जो सम्पूर्ण भारत में सुदूर दक्षिण से हिमालय में 5000 फीट की उंचाई तक पाया जाता है। इनका प्रजनन काल मार्च से जून तक होता है, परन्तु क्षेत्रीय विविधतानुसार जनवरी से अगस्त तक भी देखा गया है। मादा शकरखोरा एक बार में 2-3 अंडे देती है।



सफेद खंजन



व्हाईट वैगटेल - खंजन भारतीय साहित्य का चिरपरिचित और उपमेय पक्षी है । यह जाड़े में उत्तर की ओर से आकर सारे देश में फैल जाता है और गर्मी आरम्भ होते ही शीत प्रदेशों में लौट जाता है । यह एक छोटा सा चंचल पक्षी है जिसकी लम्बाई 7-9 इंच तक होती है। देह लम्बी तथा पतली होती है। यह पानी के किनारे बैठा अपनी पूँछ बराबर हिलाता रहता है। सफेद खंजन रंग में चितकबरा होता है। इसके उपर का हिस्सा स्लेटी और डैने काले होते है। यह पानी के किनारे छोटे झुण्डों में कीड़े-मकोड़ों का शिकार करता रहता है और दौड़ कर चलता है। सामान्यतः यह दो चार की टोली में ही देखा जाता है। इनका वजन 20-25 ग्राम तक होता है। इसकी मादा एक बार 4-7 अंडे देती है और इनका जीवनकाल 12 साल के आसपास होता है।

हरियल, पतेना

ग्रीन बी इटर- इसे छोटा हरा मुधुमक्खी भक्षक के रूप में भी जाना जाता है । ये मुख्य रूप से कीट खाने वाले होते है और वे घास के मैदान, पतली झाडियों में और जंगलो में पाये जाते है जो अक्सर पानी से काफी दूर होते है । इन्हे हिन्दी में हरियल भी कहते है क्योंकि इनका रंग बिलकुल हरी घास की तरह चमकता हुआ दिखाई देता है । इसकी लम्बी, पतली और मुडी हुई चोच इसे खास बनाती है जिससे इसे कीड़े पकड़ने में आसानी होती है । यह सामान्यतः जोड़े में या झुन्ड में टेलीफोन के तारो और पेड़ की टहनियो पर दिखते हैं । इनकी लम्बाई लगभग 20 सेन्टीमीटर होती है और रंग रूप में नर और मादा एक सामान दिखते है । इनका प्रजनन काल मार्च से जून अथवा कभी-कभी जुलाई से अगस्त तक होता है । इसकी मादा एक बार में 4-8 अण्डे देती है जिसमें से 22-31 दिन में चूजे बाहर आते है ।



Pratik

बगुला

येलो बिटर्न - बगुला प्रजाति का यह पक्षी 36-38 सेन्टीमीटर का पीले रंग का पक्षी होता है। इसकी गर्दन छोटी और चोंच लम्बी होती है। इसका मुख्य भोजन छोटी मछलियां कीड़े और उभयचर जीव होते है। इनको जलभराव वाले क्षेत्र, तालाबों में सरकंडों व ऊँची घास में रहना पंसद है और इन्हीं में यह प्रजनन काल में घोंसला भी बनाते है। इसकी मादा 4-6 अंडे एक बार में देती है।



तालाब बगुला -

पांड हेरोन - भारत में 21 प्रकार के बगुले पायें जाते है, इनमें सबसे प्रसिद्ध भूरा बगुला है। यह बगुला अपने मटमैले भूरे रंग की वजह से चट्टानों और तालाब के किनारे छुपकर बैठा रहता है तथा दिखाई नहीं देता है। इसका आकार 40-50 सेमी के बीच होता है और इसके पंखो का फैलाव 70-90 सेमी तक होता है। इसे अंधा बगुला भी कहते है । एक पूर्ण वयस्क का भार 230-280 ग्राम के बीच होता है। इसका शरीर भूरे रंग का होता है, परन्तु जब उड़ान भरता है तो इसके सफेद पंख दिखाई देते है। इसकी चोंच पीले रंग की होती है। यह छिछले पानी के आसपास रहना पसन्द करता है। इनका आहार कीड़े-मकोड़े, छोटी मछलियां, मधुमक्खिया और ड्रेगन फ्लाई है। इनका प्रजनन काल मई से सितम्बर के बीच होता है और यह मानव बस्तियों के आस पास ही अपना घोंसला बनाना पसन्द करते है। इसकी मादा एक बार में 3-7 बार अंडे देती है।



Pratik



Photo - Chadan Pratik



घोंघिल -

एशियन ओपेन बिल्ड स्टार्क - यह एक बृहदाकार पक्षी है जो पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर पूरे भारतीय उप महाद्वीप में पाई जाती है। लंबी गर्दन व टांगे तथा चोंच के मध्य खाली स्थान इनकी मुख्य पहचान है। इसके पंख काले सफेद रंग के होते है जो प्रजनन के समय अधिक चमकीले हो जाते है। इनकी टांगे गुलाबी रंग की होती है। इनका आकार बगुले से बड़ा व सारस से छोटा होता है। इनके चोंच के मध्य खाली स्थान होने से इन्हें ओपेन बिल्ड कहा जाता है। यह पक्षी पूर्णतया मांसाहारी है। दुनिया में इसकी कुल 20 प्रजातियां पाई जाती है जिनमें 8 प्रजातियां भारत में मौजूद है। यह अपने घोंसले मुख्यतः इमली,बरगद, पीपल, बबूल, बांस व यूकेलिप्टस के पेड़ों पर बनाते है। एक पेड़ पर 40-50 घोंसले तक पाये जाते है। प्रत्येक घोंसले में 4-5 अंडे होते है। सितम्बर के अंत तक इनके चूजे बड़े होकर उड़ने में समर्थ हो जाते है और अक्टूबर में यह पक्षी यहाँ से चले जाते है। ये मानसून के साथ-साथ यहां आते हैं इसीलिए ग्रामीण इन्हें बरसात का सूचक मानते है।





उल्लू

एशियन बार्ड अउलेट - धरती पर पारिस्थितिकी संतुलन बनाने में इस पक्षी की अहम भूमिका है। चूहे, छछुंदर और हानिकारक कीड़ों-मकोड़ो का शिकार करने के कारण इन्हें प्राकृतिक सफाई कर्मी भी कहते है। यह एक ऐसा पक्षी है जिसे दिन के मुकाबले रात में साफ दिखाई देता है इसलिए यह रात को ही शिकार करता है। ये अपनी तेज सुनने की शक्ति के दम पर ही शिकार करता है। एक उल्लू एक साल में एक हजार के आसपास चूहे खा जाता है। दुनियां भर में उल्लू की करीब 200 प्रजातियां है। भारत में मुख्यतः 2 प्रजाति मुआ और घुग्घू पाई जाती है। मुआ पानी के करीब घुग्घू पेड़ों और खंडहरों पर रहते है। हिन्दू संस्कृति में यह माना जाता है कि उल्लू समृद्धि और धन लाता है और यह माता लक्ष्मी की सवारी है। दुनिया का सबसे छोटा उल्लू 5-6 इंच और सबसे बड़ा 32 इंच तक होता है। पलकें नहीं होने के कारण इनकी आंखे हमेशा खुली होती है और यह अपने सिर को दोनों तरफ 135 डिग्री तक घुमा सकता है। यह झुण्ड में नहीं रहते और अकेला रहना पसन्द करते हैं। यह इंसान के मुकाबले 10 गुना घीमी आवाज सुन सकता है। इनका प्रजनन का समय मार्च से जून तक होता है। ये अक्सर दूसरे के बनायें घोंसलों में रहते है।

पपीहा

कामन हॉक- यह एक ऐसा पक्षी है । जो दक्षिण एशिया में बहुतायत में पाया जाता है । यह देखने में कबूतर जैसा लगता है । इसकी आँखे पीले रंग की होती है । और शरीर का ऊपरी हिस्सा हल्के भूरे रंग का होता है । इसकी चोंच और पैर पीले रंग के होते है । जिसमें थोड़ा हरा रंग लिए हल्के-हल्के धब्बे होतें है । इसकी लम्बाई 15.19 इंच तक होती है । नर और मादा रंग रूप में एक जैसे ही होते है । खाने में इसे कीड़े मकोड़े अधिक पसंद है । यह बसंत और बारिश के दिनों में आम के पेड़ पर बैठकर पीहू-नीहू की आवाज निकालता है । इस पक्षी की खास बात यह है कि यह केवल बारिश की ही पानी पीता है । इसके अण्डो का रंग भी कोयल के अण्डों की तरह नीला होता है यह पक्षी हाक प्रजाति के पक्षी ''शिकरा'' जैसा दिखाई देता है और इसकी उड़ान और डालों पर बैठने की तरीका भी शिकरा के समान ही होता है इसी कारण इसे हाक कुकू नाम दिया गया है । इनका प्रजनन काल अप्रैल से जून के मध्य होता है और इनका जीवनकाल 10-15 वर्ष तक का होता है ।



कोदुर बड़ा बसंता



बाउन हेडेड ग्रीन बारबेट - कोदुर भारी चोच वाले खाय के रंग के वृक्षीय पक्षी है जिनका आकार लगभग 27 सेन्टीमीटर होता है । नर और मादा रंगरूप में एक जैसे होते है । उनके सिर, गर्दन ऊपरी पीठ और सीने पर गहरे भूरे रंग वे श्रवेत धारी वाले पर होते है जबकि निचला सीना और पेट हरे रंग के होते है । उनकी पूँछ का निचला भाग हल्का नीला होता है आँखे नारंगी रंग के वलय से घिरी होती है उनका आहार फल और कीड़े मकोड़े है । फल उद्यानों में वे 20 की संख्या तक के झुंड में देखे गये है पर प्रायः अकेले ही पाये जाते है । यह भूमि से 2-15 मीटर की ऊँचाई तक वृक्ष कोटरों में अण्डे देते है । इनका प्रजनन काल फरवरी से जून तक होता है ।



सारस

क्रेन - सारस विश्व का सबसे विशाल उड़ने वाला पक्षी है । इसको हम क्रौंच के नाम से भी जानते है। पूरे विश्व में भारतवर्ष में इस पक्षी की सबसे अधिक संख्या पाई जाती है। उत्तर प्रदेश के इस राजकीय पक्षी को मुख्यतः गंगा के मैदानी भागों ,भारत वे उत्तरी और उत्तर पूर्वी तथा इसी प्रकार के समान जलवायु वाले अन्य भागों में देखा जा सकता है । यह श्वेताभ-स्लेटी रंग के परों से ढका होता है । इसके उपरी गर्दन और सिर के हिस्सो पर गहरे लाल रंग की थोडी खुरदुरी त्वचा होती है । कानों के स्थान पर स्लेटी रंग के पर होते है । इसका औसत भार 7.3 किलोग्राम तक होता है तथा लम्बाई 173 सेन्टीमीटर लगभग 6 फीट तक हो सकती है । नर और मादा लगभग एक जैसे ही दिखते है परन्तु मादा का शरीर अपेक्षाकृत छोटा होता है। पूरे विश्व में इनकी 8 प्रजातियाँ पाई जाती है जिनमें से 4 भारत में पाई जाती है । इसका मुख्य निवास स्थन दलदली भूमि, बाढ वाले स्थान, तालाब, झील, परती जमीन और मुख्यतः धान के खेत है । ये मुख्यतः शाकाहारी होते है और कंदों, बीजों और अनाज के दानों को ग्रहण करते है । एक बार जोड़ा बनाने के बाद वे जीवन भर साथ रहते है मादा एक बार में 2-3 अण्डे देती है और नर और मादा इन्हे बारी बारी से सेते है । एक महीने के पश्चात् अण्डों से बच्चे बाहर आते है । इनका जीवन काल 18 वर्ष तक का हो सकता है ।





काली चील

बैल्क विंग्ड काईट- काली चील एक मध्यम आकार की शिकारी पक्षी है। यह एक मौका परस्त शिकारी होता है जो कि अपना अधिकतर समय आकाश में उड़ते हुए, ग्लाईड करते हुए बिताता है। यह शिकार कम करता है और अक्सर मृत जानवरों की तलाश करता है। भारतीय काली चील का आकार छोटा होता है। यह मनुष्य की घनी आबादी के करीब रहने के अनुकूलित हो गयी है। मनुष्य द्वारा फेंका गया जानवरों का मांस इसका मुख्य भोजन होता है। लगभग हर भारतीय शहर के आकाश में इसे उड़ते हुए देखा जा सकता है। इसकी आंखे बहुत तेज होती है और यह बहुत उंचाई से भी चूहे जैसे छोटे जानवरों को भी देख लेती है। इसका प्रजनन काल जनवरी से लेकर फरवरी तक रहता है तथा अंडे से निकले बच्चें मानसून से पहले उड़ने लग जाते है। यह एक ही घोसले कोई सालों तक इस्तेमाल करती है और अपना घोंसला पेड़ों की ऊँची शाखाओं पर बनाती है। काली चील एक बार में 2-3 अंडे देती है। तथा अंडे से निकलने के बाद बच्चे 2 महीने तक घोंसले के अंदर ही रहते है।

यूरेशियन जल मुर्गी

यूरेशिन जल मुर्गी - यह पक्षी भारत के सभी हिस्सों में पाया जाता है। यह एक मध्यम आकार का जमीन पर रहने वाला जलीय जीव है। इस पक्षी का रंग, जैतूनी, भूरा व काले रंग का मिश्रण होता है। इसके शरीर के निचले हिस्से का रंग स्लेटी व पूँछ के नीचे सफेद रंग के पंख होते हैं। इसकी चोंच पीले रंग की तथा छोटी होती है। चोंच के चारों तरफ लाल रंग की सील होती है। इसके पाँव छोटे तथा पंजे बड़े तथा पीले रंग के होते हैं। जिसकी सहायता से वे दलदल व पानी के अन्दर तैर रही वनस्पति पर आसानी से चल लेते हैं। यह सर्वभक्षी पक्षी है जो छोटी मछलियाँ, केंचुये, अन्य जलीय जीव व पानी के आसपास उगी वनस्पती को खाते हैं। इनके प्रजनन का समय जुलाई से सितम्बर तक का होता है। मादा पक्षी 5-8 अंडे एक साथ देती है।



Pratik

पनकौवा

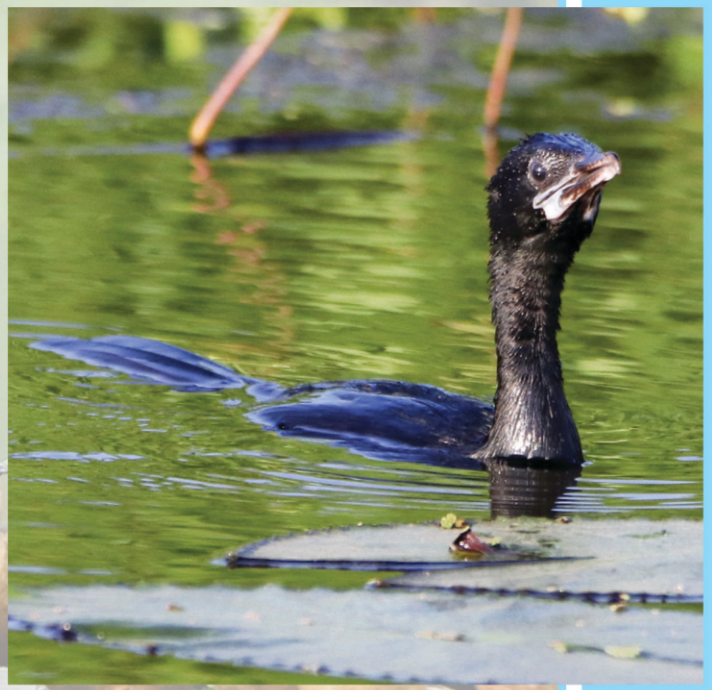

लिटिल कारमोरेन्ट- लगभग 50 से.मी. के आकार का यह आवासी प्रवासी पक्षी कौवों से भी अधिक काला होता है। इसकी कई जातियाँ सारे संसार में पाई जाती हैं। इसके पंख काले और चमकदार होते हैं। ये अपना अधिक समय पानी में ही बिताते हैं और पानी के भीतर मछलियों की तरह तैर लेते हैं। इसकी चोंच हुक के समान मुड़ी हुई होती है। चौड़ी पूंछ सीधी और तनी हुई होती है। इसकी टाँगें छोटी और उँगलियाँ ज़ालपाद होती है। नर और मादा पनकौवा में कोई अंतर नहीं होता है । यह अकेला या 20 पक्षियों के झुंड में पाया जाता है। कभी-कभी झुंड इससे बड़ा भी होता है। यह पक्षी पोखर, तालाब, झील, जलाशय, लैगून और सिंचाई के लिए बनाए गए जलस्रोतों के निकट पाया जाता है। मुख्यतः यह मछली, मेढ़क, घोंघे औए सीपी खाता है। यह पानी में डूब कर मछलियों को पकड़ता है। हुक के समान मुड़ी चोंच में फंस कर शिकार निकल नहीं पाता। भरपेट भोजन खा लेने के बाद ये किनारे, चट्टानों, टीले, पेड़ों की शाखाओं आदि पर बैठ कर फ़ुरसत से अपने पंखों को फैलाकर सुखाता रहता हैं। उत्तर भारत में इस पक्षी में प्रजनन वर्षा ऋतु या मानसून के आगमन के समय, यानी जुलाई माह में शुरू होता है जो सितम्बर तक रहता है। दक्षिण भारत में प्रजनन नवंबर से लेकर फरवरी तक होता है। जलाशयों के आसपास पाए जाने वाले वृक्षों पर यह अपना घोंसला बनाता है। यह चार से पांच नीले-हरे रंग का अंडा देता है। नर और मादा दोनों ही अंडों को सेते हैं।



दर्जिन पक्षी

टेलर बर्ड - यह पक्षी जंगलो , खुले मैदानों और बगीचों में पाया जाता है । दर्जिन पक्षी ज्यादातर पेड़ो पर ही रहना पसंद करता है। दर्जिन पक्षी की विश्व भर में करीब 9 प्रजातियां पायी जाती हैं। इसके पंख छोटे और गोलाकार होते हैं, पूंछ छोटी, पैर मजबूत पाए जाते है । इस पक्षी की चोंच लम्बी और घुमावदार होती हे। इसके सिर का रंग ज्यादातर भूरा और लाल होता है, इसके शरीर का ऊपरी हिस्सा हरा और निचला हिस्सा पीला या सफ़ेद पाया जाता है । दर्जिन पक्षी को यह नाम उसके घोसले बनाने की कला से दिया गया है। यह एक सर्वहारी पक्षी होता है जिसका भोजन फल, बीज और छोटे छोटे कीड़े मकोड़े आदि होते हैं । इस का वजन करीब 8 ग्राम होता है और ऊंचाई करीब 10 से 15 सेंटीमीटर होती है । यह पक्षी पेड़ पर पत्तियों को छेद करके उन्हे अपनी चोंच द्वारा सिल देता है । मादा दर्जिन पक्षी अपने घोसले में करीब 4 से 5 काले रंग के अंडे देती है । इस पक्षी का जीवनकाल करीब 3 से 4 साल का होता है ।

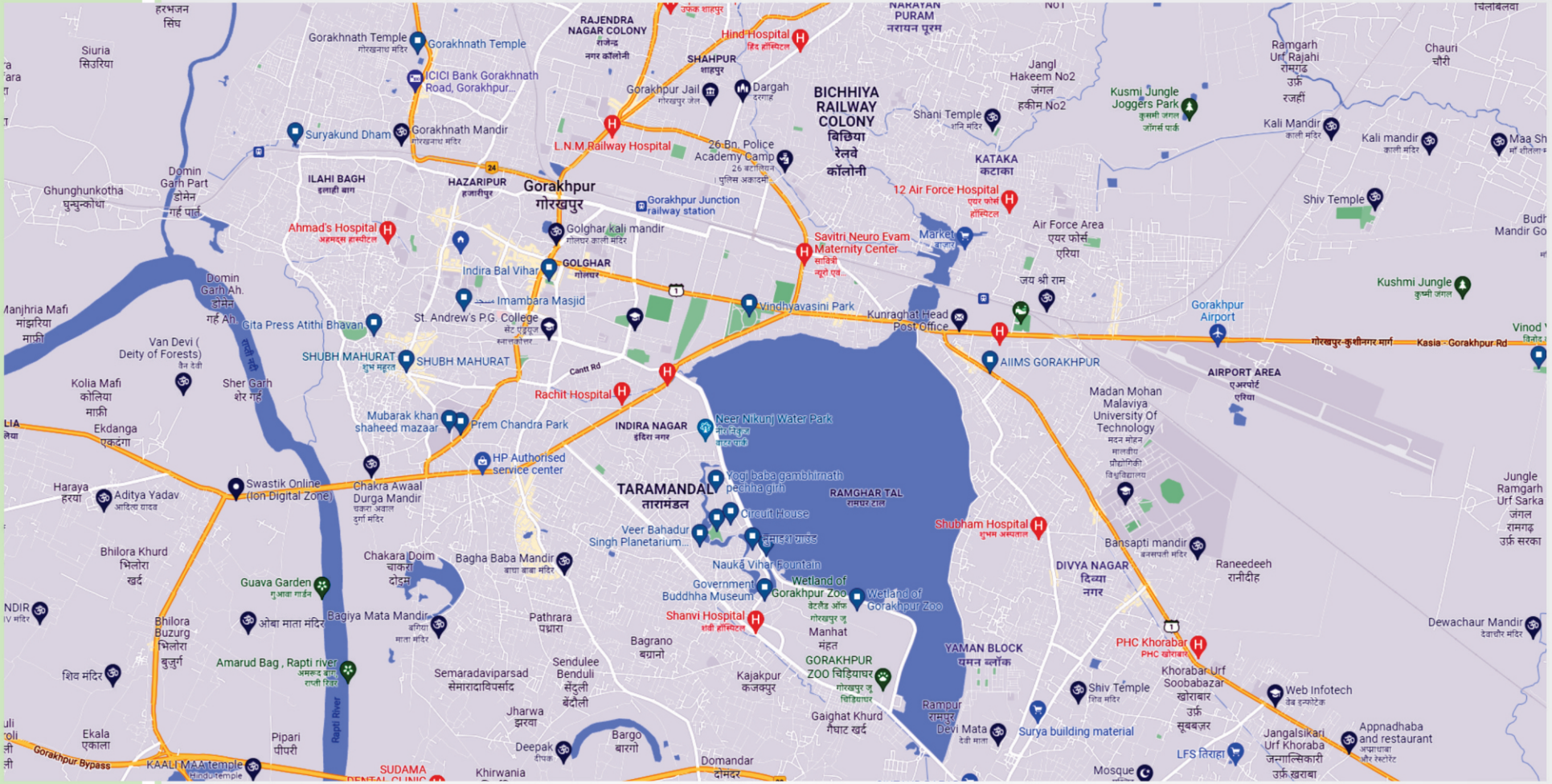

रेलवे स्टेशन से प्रमुख स्थानों की दूरी

लेहड़ा देवी मंदिर	-	51.7	किमी.
चौरी चौरा	-	25.3	किमी.
तरकुलहा माता मंदिर	-	22.4	किमी.
बुढ़िया माता मंदिर- कुसुम्ही जंगल	-	11.8	किमी.
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान	-	10	किमी.
बी.आर.डी. मेडिकल कालेज	-	8.5	किमी.
शहीद अशफ़ाक उल्लाह खाँ प्राणी उद्यान	-	8.6	किमी.
नौका बिहार, रामगढ़ ताल	-	6.4	किमी.
सूरजकुण्ड धाम	-	4.7	किमी.
गोरखनाथ मंदिर	-	3.9	किमी.
राजकीय उद्यान	-	3.1	किमी.
गोलघर बाजार	-	1.4	किमी.

कुसुम्ही जंगल

कुसुम्ही जंगल गोरखपुर का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है यह साल और सेकोई के पेड़ो के लिए जाना जाता है । गोरखपुर कुशीनगर मार्ग पर स्थित यह सघन वन इलाको मे फैला हुआ है शहर से करीब होने के कारण यह शहरियों का पसंदीदा पिकनिक स्पाट बन गया है इस जगंल के बीच बुठिया माई का मंदिर लम्बे समय से लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहा है । यही पर वन विभाग का विश्राम गृह भी है ।







विनोद वन

शहर के करीब हरे भरे कुसुम्ही जगंल के बीच स्थित विनोद वन हमेशा से शहरियों का पसंदीदा पिकनिक स्पाट रहा है । यहाँ बच्चो के झूले इसे लोगो की पसंद बनाते है । बड़ी संख्या मे शहरी यहाँ स्वच्छ और सुरम्य वातावरण की आनन्द लेने पहुँचते है ।



महायोगी गुरू गोरखनाथ की नगरी में आपका स्वागत है...



वन विभाग उत्तर प्रदेश

गोरखपुर वन प्रभाग

Biodiversity Conservation

HERITAGE FOUNDATION
Conserving The Future

संकल्पना
नरेन्द्र मिश्र
राजीव दत्त पाण्डेय
अनिल त्रिपाठी

फोटो क्रेडिट :
अनुपम अग्रवाल, चन्दन प्रतीक
धीरज सिंह, कार्तिक मिश्रा, मनीष कुमार
संगम दूबे